सदस्य बनें
सच और सरोकार की पत्रकारिता से जुड़ें
वार्षिक सदस्यता : ₹ 500 मात्र
पूरा वर्ष अख़बार नि:शुल्क
पैनल विज्ञापन दें
अपने व्यवसाय/संस्था का प्रचार करें 'जन जन विचार' में।
किफायती • प्रभावी • विश्वसनीय
संपर्क : 69001 26012

जन जन की बात जन जन तक
साप्ताहिक
जन जन विचार
RNI Regd No. ASMUL/25/A2367::Guwahati, Friday, 5 June 2026 :: Vol-21 Year-1 :: शुक्रवार । 5 जून 2026 । शक संवत 1948 । ज्येष्ठ । कृष्ण । पंचमी । :: पृष्ठ-8 । मूल्य – 5 रुपए

D.S. Associates
Sri Om Plaza
2nd Floor, K.C. Road,
Chatribari, Guwahati-1
Phone : 7002682705

जन चिंतन
धनेश्वर चौधरी

टीएमसी में बगावत

पश्चिम बंगाल की राजनीति में तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) का मौजूदा संकट केवल एक दल की अंदरूनी कलह नहीं है, बल्कि भारतीय राजनीति की एक पुरानी बीमारी का ताजा उदाहरण है–व्यक्ति और परिवार केंद्रित राजनीति।

15 वर्षों तक सत्ता में रहने वाली टीएमसी में आज जो बिखराव दिखाई दे रहा है, वह अचानक पैदा नहीं हुआ। सत्ता में रहते हुए संगठन के भीतर असंतोष, गुटबाजी और नेतृत्व को लेकर सवाल दबे रहे। सत्ता का आकर्षण और प्रशासनिक प्रभाव उन आवाजों को नियंत्रित करता रहा जो खुलकर सामने नहीं आ पा रही थीं। लेकिन जैसे ही राजनीतिक परिस्थितियां बदलीं, वर्षों से दबा असंतोष विस्फोट बनकर बाहर आ गया।

सबसे बड़ा प्रश्न अभिषेक बनर्जी की भूमिका को लेकर उठ रहा है। पार्टी के भीतर लंबे समय से यह धारणा बनती गई कि निर्णय **शेष पृष्ठ 2 पर**

असम में यूसीसी लागू होने की राह साफ, सरकार ने हाईकोर्ट को बताया

मुस्लिम विवाह व तलाक कानून रद्द

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

असम में समान नागरिक संहिता (यूसीसी) लागू होने की दिशा में एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम सामने आया है। गौहाटी उच्च न्यायालय में राज्य सरकार ने स्पष्ट किया है कि यूसीसी, असम–2026 के पारित होने के बाद असम मुस्लिम विवाह पंजीकरण एवं तलाक अधिनियम, 2024 स्वत: निरस्त हो चुका है। सरकार के इस बयान के बाद राज्य में विवाह, तलाक और पारिवारिक कानूनों को लेकर नई बहस शुरू हो गई है।

यह मामला ऑल असम काजी एसोसिएशन द्वारा दायर याचिका से जुड़ा है, जिसमें 2024 के कानून की वैधता और उसके क्रियान्वयन को चुनौती दी गई थी। सुनवाई के दौरान राज्य सरकार ने अदालत को बताया कि यूसीसी के लागू होने के बाद मुस्लिम विवाह और तलाक के पंजीकरण की प्रक्रिया नए कानून के तहत संचालित होगी। सरकार वर्तमान में यूसीसी के नियमों को अंतिम रूप देने और अधिसूचित करने की प्रक्रिया में जुटी हुई है।

इस घटनाक्रम से काजियों की भूमिका, मुस्लिम विवाह पंजीकरण व्यवस्था तथा नए कानूनी ढांचे में बदलाव को लेकर कई महत्वपूर्ण प्रश्न खड़े हो गए हैं। अदालत ने मामले की अगली सुनवाई 7 अगस्त निर्धारित की है।

गौरतलब है कि 27 मई को असम विधानसभा ने तीखी बहस के बाद यूसीसी विधेयक, 2026 को पारित किया था। इसके साथ ही असम, उत्तराखंड और गुजरात के बाद समान नागरिक संहिता कानून लागू करने वाला देश का तीसरा राज्य बन गया। नया कानून विवाह, तलाक, उत्तराधिकार, संपत्ति और लिव-इन संबंधों के लिए सभी धर्मों पर समान कानूनी व्यवस्था लागू करने का प्रावधान करता है। साथ ही बहुविवाह पर प्रतिबंध और लिव-इन संबंधों का पंजीकरण अनिवार्य किया गया है।

राजनीतिक और सामाजिक हलकों में यूसीसी को लेकर बहस तेज हो गई है। समर्थक इसे समानता और न्याय की दिशा में ऐतिहासिक कदम बता रहे हैं, जबकि विपक्ष और कुछ सामाजिक संगठनों ने व्यापक चर्चा और परामर्श की आवश्यकता पर जोर दिया है।

अंदर पढ़ें

3 असम देश का सबसे तेजी से बढ़ता राज्य
4 कर्नाटक में बदलाव
5 ममता का साथ हो गया 'खेला'
7 आईपीएल 2026 : आरसीबी ने बनाई जीत की संस्कृति

लापांगाप विवाद : किसानों को खेती की अनुमति

जन जन विचार
...✍ शिलांग

असम और मेघालय सरकारों ने लंबे समय से विवादित लापांगाप क्षेत्र में तनाव कम करने के लिए एक महत्वपूर्ण अस्थायी समझौता किया है। दोनों राज्यों के प्रतिनिधियों की बैठक में निर्णय लिया गया कि सीमा विवाद के स्थायी समाधान तक दोनों पक्षों के ग्रामीण निर्धारित क्षेत्रों में खेती जारी रख सकेंगे।

असम पुलिस शिविर में आयोजित बैठक में सहमति बनी कि मेघालय के लापांगाप गांव के किसान खेतों में धान की खेती करेंगे, जबकि असम के तहपट गांव के किसान पहाड़ियों और ढलानों पर केला, अनानास, अदरक तथा अन्य मौसमी फसलों की खेती कर सकेंगे।

दोनों राज्यों ने यह भी तय किया कि स्थायी सीमा निर्धारण का मुद्दा उच्चस्तरीय समिति के समक्ष रखा जाएगा, जो भविष्य में अंतिम निर्णय लेगी। बैठक में दोनों पक्षों ने शांति, सौहार्द और कानून-व्यवस्था बनाए रखने तथा किसी भी प्रकार की उकसाने वाली गतिविधि से दूर रहने पर सहमति व्यक्त की।

यह समझौता हाल ही में मेघालय के मुख्यमंत्री कॉनराड संगमा और असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा के बीच हुई बैठक के बाद संभव हुआ।

बैंगनी होगा गुवाहाटी : स्वच्छता और सौंदर्यीकरण की अनोखी मुहिम

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

देश के सबसे स्वच्छ शहरों की सूची में गुवाहाटी को शीर्ष स्थान दिलाने के उद्देश्य से गुवाहाटी नगर निगम (जीएमसी) ने एक महत्वाकांक्षी और जनभागीदारी आधारित अभियान की शुरुआत की है। 'स्वच्छ सर्वेक्षण–2026' को ध्यान में रखते हुए निगम ने शहर की महिला समितियों, विकास समितियों, नागरिक संगठनों और क्लबों के बीच क्षेत्रवार स्वच्छता

प्रतियोगिता की घोषणा की है। इस अभियान का उद्देश्य केवल सफाई तक सीमित नहीं है, बल्कि गुवाहाटी को एक स्वच्छ, हरित, सुंदर और विशिष्ट पहचान वाले शहर के रूप में विकसित करना भी है।

यहां उजानबाजार स्थित जीएमसी कार्यालय में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में महापौर मृगेन शरणिया ने कहा कि स्वच्छता केवल सरकार या नगर निगम की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि पूरे समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि यह **शेष पृष्ठ 3 पर**

विश्व पर्यावरण दिवस से शुरू होगा 'पर्पल सिटी' अभियान

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर 5 जून से गुवाहाटी को 'पर्पल सिटी' के रूप में विकसित करने की महत्वाकांक्षी पहल शुरू होने जा रही है। दिसपुर के विधायक प्रद्युत बरदलै ने एक संवाददाता

सिलचर कांग्रेस कार्यालय में हंगामा

जन जन विचार
...✍ सिलचर

चुनावी समीक्षा बैठक के दौरान सिलचर जिला कांग्रेस कार्यालय में उस समय तनावपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो गई, जब पार्टी विरोधी गतिविधियों के आरोप में जिला अल्पसंख्यक विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर अंसार हुसैन बरलस्कर के साथ कथित रूप से मारपीट की गई। जानकारी के अनुसार, बैठक में विभिन्न विधानसभा क्षेत्रों के चुनावी प्रदर्शन की समीक्षा की जा रही थी। प्रदेश कांग्रेस के पदाधिकारी प्रांजल घटवार, स्वप्न कर तथा विधायक अमीनुर रशीद चौधरी नेताओं और कार्यकर्ताओं के विचार सुन रहे थे। सभी क्षेत्रों की समीक्षा शांतिपूर्ण ढंग से चल रही थी, लेकिन सोनाई विधानसभा क्षेत्र की समीक्षा शुरू होते ही विवाद खड़ा हो गया। सोनाई के विधायक अमीनुल हक लस्कर के समर्थकों ने आरोप लगाया कि अंसार हुसैन बरलस्कर ने चुनाव के दौरान कांग्रेस उम्मीदवार के खिलाफ काम करते हुए अगप प्रत्याशी करीम उद्दीन के समर्थन में प्रचार किया था। इसी आरोप को लेकर समर्थकों ने उन्हें बैठक से बाहर निकालने की मांग की। अंसार हुसैन के बैठक छोड़ने से इनकार करने पर दोनों पक्षों के बीच तीखी बहस शुरू हो गई, जो बाद में धक्का-मुक्की और मारपीट में बदल गई।

रोहा में नगांव जिला साहित्य सभा की कार्यकारिणी बैठक संपन्न

जन जन विचार
...✍ रोहा

असम साहित्य सभा की नगांव जिला साहित्य सभा की विस्तारित कार्यकारिणी बैठक 3 जून को रोहा शाखा साहित्य सभा के आतिथ्य में रोहा क्रीड़ा संघ प्रेक्षागृह में संपन्न हुई। कार्यक्रम का शुभारंभ ध्वजारोहण, दीप प्रज्वलन एवं श्रद्धांजलि अर्पण के साथ हुआ। इस अवसर पर डॉ. भूपेन हजारिका और जुबिन गर्ग को श्रद्धांजलि दी गई।

जिला साहित्य सभा के अध्यक्ष एवं शिक्षाविद् शरत बरकटकी की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में असमिया भाषा, साहित्य और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण एवं संवर्धन पर विस्तृत चर्चा हुई। सभा में नगांव जिले की लोककथाओं, लोकगीतों, कहावतों एवं सांस्कृतिक धरोहरों का संकलन कर एक पुस्तक प्रकाशित करने का प्रस्ताव पारित किया गया। इसके अलावा असमिया भाषा के शुद्ध प्रयोग, वर्तनी जागरूकता, भाषा की गरिमा की रक्षा तथा भाषा संरक्षण को लेकर विशेष प्रस्ताव स्वीकार किए गए। बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि जो शाखाएं निर्धारित कार्यसूची का पालन नहीं कर रही हैं, उन्हें निष्क्रिय घोषित किया जाएगा।

आकांक्षा ने बढ़ाया असम का गौरव

जन जन विचार
...✍ ढेकियाजुली

असम की प्रतिभाशाली छात्रा आकांक्षा बसुमतारी ने इतिहास विषय में स्नातकोत्तर अंतिम परीक्षा में स्वर्ण पदक प्राप्त कर राज्य का नाम रोशन किया है। ढेकियाजुली वार्ड संख्या-5 निवासी सुशील बसुमतारी और मोनिका बसुमतारी की पुत्री आकांक्षा ने देश के प्रतिष्ठित नालंदा विश्वविद्यालय से यह उपलब्धि हासिल की। 19 मई को घोषित परीक्षा परिणाम में उत्कृष्ट प्रदर्शन के बाद आकांक्षा हाल ही में अपने गृह नगर पहुंचीं, जहां विभिन्न सामाजिक, शैक्षणिक और छात्र संगठनों ने उनका अभिनंदन किया। आकांक्षा ने अपनी सफलता का श्रेय माता-पिता के सहयोग और निरंतर मेहनत को दिया। उन्होंने कहा कि नालंदा जैसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय से स्वर्ण पदक प्राप्त करना उनके लिए गर्व की बात है।

पूर्व कांग्रेस नेता नंदकिशोर का निधन

नाजिरा। असम के पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय हितेश्वर सैकिया के करीबी सहयोगी, चाय जनजाति समुदाय के वरिष्ठ नेता एवं समाजसेवी नंदकिशोर भगत का 73 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उन्होंने शिवसागर सिविल अस्पताल में उपचार के दौरान अंतिम सांस ली।

उनके निधन की खबर फैलते ही बड़ी संख्या में शुभचिंतक और क्षेत्रवासी उनके आटखेल स्थित आवास पर पहुंचे और श्रद्धांजलि अर्पित की। नंदकिशोर भगत लंबे समय तक कांग्रेस पार्टी के चाय प्रकोष्ठ के शिवसागर जिला अध्यक्ष रहे। इसके अलावा वे आंचलिक पंचायत के सदस्य तथा आटखेल ग्राम रक्षा दल के सचिव पद पर भी कार्यरत रहे थे।

हाल के वर्षों में उन्होंने कांग्रेस छोड़कर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का दामन थाम लिया था और पार्टी के सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में कार्य कर रहे थे।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

टीएमसी में बगावत

प्रक्रिया सीमित लोगों तक सिमट रही है। जब किसी राजनीतिक दल में संवाद की जगह निष्ठा, योग्यता की जगह निकटता और संगठन की जगह व्यक्तियों का प्रभाव बढ़ने लगता है, तब टूट केवल समय का इंतजार करती है।

विडंबना यह है कि टीएमसी का जन्म ही कांग्रेस के केंद्रीकरण और वंशवादी राजनीति के विरोध से हुआ था। आज उसी पार्टी पर परिवारवाद और सीमित नेतृत्व के आरोप लग रहे हैं। इतिहास का यह व्यंग्य भारतीय राजनीति को आईना दिखाता है।

किसी भी लोकतांत्रिक दल की सबसे बड़ी ताकत उसका संगठन होता है, कोई एक चेहरा नहीं। जब राजनीतिक दल विचारधारा से अधिक व्यक्तियों पर निर्भर हो जाते हैं, तब उनका भविष्य भी उन्हीं व्यक्तियों की लोकप्रियता से बंध जाता है।

टीएमसी का संकट केवल बंगाल का संकट नहीं है। यह उन सभी दलों के लिए चेतावनी है जहां संगठन से ऊपर परिवार और संवाद से ऊपर आदेश को महत्व दिया जाता है। राजनीति में असहमति को दबाया जा सकता है, समाप्त नहीं किया जा सकता।

साप्ताहिक राशिफल

5 जून से 11 जून 2026 ।। विक्रम संवत 2083-**मास** : ज्येष्ठ, **पक्ष** : कृष्ण, **तिथि** : पंचमी

मेष : सप्ताह की शुरुआत में कार्यों के प्रति सावधानी रखें। वाहन चलाते समय विशेष सतर्कता बरतें। अनावश्यक खर्च से बचें और समय का सदुपयोग करें। सप्ताह के उत्तरार्ध में आर्थिक एवं व्यावसायिक लाभ के संकेत हैं।

वृषभ : नए कार्यों की शुरुआत के लिए समय अनुकूल है। निवेश करते समय सोच-समझकर निर्णय लें। कार्यक्षेत्र में थोड़ा अधिक परिश्रम करना पड़ सकता है, जिसका सकारात्मक परिणाम प्राप्त होगा।

मिथुन: यह सप्ताह आपके लिए शुभ एवं सफलतादायक रहेगा। आर्थिक एवं व्यावसायिक उन्नति के योग बन रहे हैं। समय का सही प्रबंधन करने पर निश्चित रूप से सफलता मिलेगी।

कर्क: यह सप्ताह आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा। कानूनी मामलों एवं सरकारी कार्यों में सावधानी बरतें। शुभ समाचार मिलने से परिवार में प्रसन्नता का वातावरण बनेगा।

सिंह: लंबी या छोटी यात्राओं के योग हैं। सामाजिक जीवन में सक्रियता बढ़ेगी। विरोधियों से सावधान रहें तथा परिश्रम से लाभ प्राप्त होगा। सप्ताह आपके लिए उत्साहवर्धक रहेगा।

कन्या : अपने कार्यों पर पूरा ध्यान दें। व्यर्थ के विवादों से दूर रहें। किसी नए अवसर का लाभ मिल सकता है। निवेश से पहले अच्छी तरह विचार अवश्य करें।

तुला : सप्ताह की शुरुआत में कोई महत्वपूर्ण कार्य संपन्न हो सकता है। इससे जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आएगा। पारिवारिक सुख-शांति बनी रहेगी।

वृश्चिक : यह सप्ताह मध्यम फलदायक रहेगा। धैर्य एवं संयम बनाए रखें। सोच-विचार कर निर्णय लें और जल्दबाजी से बचें। परिश्रम का फल अवश्य मिलेगा।

धनु: सप्ताह आर्थिक एवं व्यावसायिक दृष्टि से लाभकारी है। व्यापारिक यात्रा के योग बन रहे हैं। तार्किक विवादों से बचें। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

मकर : आर्थिक रूप से उन्नति संभव है। किसी नए व्यापार या तकनीकी क्षेत्र में पहल लाभदायक सिद्ध हो सकती है। शिक्षा के क्षेत्र में भी सफलता के संकेत हैं।

कुंभ : परिवार में मांगलिक कार्य होने की संभावना है। किसी प्रिय व्यक्ति से मुलाकात होगी। आर्थिक एवं व्यावसायिक उन्नति के योग हैं। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

मीन: इस सप्ताह उतार-चढ़ाव की स्थिति रह सकती है, परंतु धैर्य रखने से समस्याओं का समाधान होगा। खर्चों पर नियंत्रण रखें और कार्यों में संतुलन बनाए रखें।

सप्ताह के पर्व/त्योहार

6 जून (शनिवार) : सेस पंचक आरंभ
7 जून (रविवार) : भानु सप्तमी
10 जून (बुधवार) : सेस पंचक समाप्ति
11 जून (बुधवार) : पुरुषोत्तमी एकादशी व्रत

भाग्योदय Bhagyoday Astrology
●ज्योतिर्विद् आचार्य अखिलेश्वर शुक्ल
भाग्योदय : पहला तल्ला, सेंट्रल प्लाजा, एमएस रोड
फैंसी बाजार, गुवाहाटी-781001 मो.-94350 40387

असम देश का सबसे तेजी से बढ़ता राज्य

हिमंत ने राष्ट्रपति को सुनाई राज्य के विकास की कहानी

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली/गुवाहाटी

असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने 3 जून को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात कर राज्य के विकास, आर्थिक प्रगति और भविष्य की योजनाओं की जानकारी दी। लगातार दूसरे कार्यकाल में मुख्यमंत्री पद संभालने के बाद राष्ट्रपति से यह उनकी पहली औपचारिक मुलाकात थी।

राष्ट्रपति भवन में हुई बैठक के दौरान मुख्यमंत्री ने असम को देश के सबसे तेजी से विकसित हो रहे राज्यों में से एक बताते हुए राज्य में चल रही विकास परियोजनाओं, आधारभूत संरचना विस्तार, जनकल्याणकारी योजनाओं और निवेश आकर्षित करने के प्रयासों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने राज्य के आगामी विकास लक्ष्यों को भी राष्ट्रपति के समक्ष रखा तथा उनके मार्गदर्शन और आशीर्वाद की कामना की।

मुख्यमंत्री ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को साहस, धैर्य और नेतृत्व की प्रतीक बताते हुए कहा कि उनसे मिलना हमेशा प्रेरणादायक अनुभव होता है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति के विचार और मार्गदर्शन जनसेवा के पथ पर आगे बढ़ने की नई ऊर्जा प्रदान करते हैं।

नई दिल्ली दौरे के दौरान मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री सहित कई केंद्रीय मंत्रियों और उद्योग जगत के प्रमुख प्रतिनिधियों से भी मुलाकात की। उन्होंने पेप्सिको इंडिया के मुख्य कार्यकारी अधिकारी के साथ राज्य में निवेश और औद्योगिक विस्तार की संभावनाओं पर चर्चा की। मुख्यमंत्री ने कहा कि असम तेजी से औद्योगिक गतिविधियों के एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभर रहा है।

राजनीतिक और आर्थिक विश्लेषकों का मानना है कि मुख्यमंत्री का यह दौरा राज्य में निवेश बढ़ाने, आधारभूत संरचना को मजबूत करने और असम को पूर्वोत्तर भारत के आर्थिक प्रवेशद्वार के रूप में स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

कृष्ण प्रसाद भट्टराई की पुस्तक का विमोचन

जन जन विचार
...✍ माजबाट

असम नेपाली साहित्य सभा की ढेकियाजुली शाखा के तत्वावधान में ढेकियाजुली स्थित भानुज्योति भवन में 'शब्द बसंत उत्सव' का आयोजन किया गया। देवराज खतिवड़ा की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ विशिष्ट चाय उत्पादक तिल बहादुर पकोवाल ने डॉ. भूपेन हजारिका और जुबिन गर्ग के चित्र पर दीप प्रज्ज्वलित एवं माल्यार्पण कर किया।

कार्यक्रम में लगभग 20 कवियों ने अपनी स्वरचित कविताओं का पाठ किया। इस अवसर पर ओरांग कलागुरु विष्णु प्रसाद राभा कनिष्ठ महाविद्यालय के सेवानिवृत्त शिक्षक कृष्ण प्रसाद भट्टराई की कविता पुस्तक 'श्रद्धांजलि सुरसम्राट डॉ. भूपेन हजारिका को' का लोकार्पण भी किया गया।

पुस्तक का विमोचन ढेकियाजुली अमिय कुमार दास महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शुकदेव अधिकारी ने किया। उन्होंने कहा कि साहित्यिक कृतियां समाज की सांस्कृतिक धरोहर को समृद्ध करती हैं और पुस्तक लेखन साधना, समर्पण तथा विषय पर गहरी पकड़ का परिणाम होता है।

कार्यक्रम में डॉ. देवी प्रसाद अधिकारी, नरेश्वर उपाध्याय, हिमसागर उपाध्याय, हर्क बहादुर पकोवाल, पुष्पलाल उपाध्याय सहित अनेक साहित्यप्रेमियों और गणमान्य व्यक्तियों ने अपने विचार व्यक्त किए। रंजन दाहाल के संचालन में आयोजित कार्यक्रम का समापन असम गीत के साथ हुआ।

आठ सौ रुपए किलो की दर से बिकी ढेकियाजुली की चायपत्ती

जन जन विचार
...✍ ढेकियाजुली

असम के शोणितपुर जिले स्थित प्रसिद्ध ढेकियाजुली चाय बागान की उच्च गुणवत्ता वाली चायपत्ती ने गुवाहाटी टी ऑक्शन सेंटर में 800 रुपए प्रति किलोग्राम का रिकॉर्ड मूल्य हासिल कर नया कीर्तिमान स्थापित किया है। 26 मई को आयोजित नीलामी में प्रतिष्ठित जैन टी कंपनी ने इस विशेष चायपत्ती की खरीदारी की।

चाय उद्योग से जुड़े विशेषज्ञों के अनुसार यह उपलब्धि उत्कृष्ट गुणवत्ता, आधुनिक उत्पादन प्रक्रिया और श्रमिकों की कड़ी मेहनत का परिणाम है। इस सफलता से राज्य के चाय उद्योग में उत्साह का माहौल है तथा अन्य चाय उत्पादकों को भी गुणवत्ता सुधारने की प्रेरणा मिलेगी।

राज्य के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने इस उपलब्धि पर बागान प्रबंधन और श्रमिकों को बधाई देते हुए इसे राज्य के लिए गर्व का क्षण बताया। उन्होंने कहा कि असम की चाय विश्व बाजार में अपनी पहचान लगातार मजबूत कर रही है। चाय उद्योग के जानकारों का मानना है कि यदि गुणवत्ता पर इसी तरह ध्यान दिया जाता रहा तो असम की चाय को भविष्य में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजार में और अधिक ऊंचे दाम मिल सकते हैं। ढेकियाजुली चाय बागान की यह सफलता राज्य के चाय उद्योग के लिए एक नई मिसाल मानी जा रही है।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

बैंगनी होगा गुवाहाटी...

प्रतियोगिता नागरिकों को अपने-अपने क्षेत्रों को आदर्श और आकर्षक बनाने के लिए प्रेरित करेगी।

'पर्पल सिटी' बनेगा गुवाहाटी : इस प्रतियोगिता की सबसे विशेष बात यह है कि असम के राज्य पुष्प 'कपौ फूल' (फॉक्सटेल ऑर्किड) के बैंगनी रंग को शहर की नई पहचान के रूप में अपनाने पर जोर दिया गया है। नगर निगम ने विकास समितियों से अपील की है कि वे अपने क्षेत्रों में घरों, दुकानों, सार्वजनिक दीवारों और अन्य स्थानों पर बैंगनी रंग का उपयोग कर सौंदर्यीकरण करें। इस मानदंड पर प्रतिभागियों को सर्वाधिक 50 अंक तक दिए जाएंगे।

जीएमसी का मानना है कि यदि नागरिकों का सहयोग मिला तो आने वाले वर्षों में गुवाहाटी देश के पहले 'पर्पल सिटी' के रूप में अपनी अलग पहचान बना सकता है।

150 अंकों के आधार पर होगा मूल्यांकन : प्रतियोगिता में 100 से 300 परिवारों का प्रतिनिधित्व करने वाली महिला समितियां, विकास समितियां, नागरिक समितियां और क्लब भाग ले सकेंगे। कुल 150 अंकों के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा। इसमें कचरा पृथक्करण, साफ नालियां, खुले में कचरा मुक्त क्षेत्र, वृक्षारोपण, जैविक खाद निर्माण, स्वच्छ सड़कें, जनजागरूकता और सौंदर्यीकरण जैसे विभिन्न मानकों को शामिल किया गया है।

5 लाख रुपए का विशेष पुरस्कार : नगर निगम ने प्रतियोगिता को आकर्षक बनाने के लिए लाखों रुपए के पुरस्कारों की घोषणा की है।

प्रथम पुरस्कार : 3 लाख रुपए, द्वितीय पुरस्कार : 2 लाख रुपए, तृतीय पुरस्कार :1 लाख रुपए, तीन प्रोत्साहन पुरस्कार: 50-50 हजार रुपए, सर्वश्रेष्ठ समिति के लिए विशेष पुरस्कार : 5 लाख रुपए। इसके अलावा 50 या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाली सभी समितियों को प्रमाणपत्र और स्मृति-चिह्न प्रदान किया जाएगा।

1000 'स्वच्छ सखी' होंगी नियुक्त : स्वच्छता अभियान को जमीनी स्तर तक पहुंचाने के लिए जीएमसी लगभग 1000 महिला 'स्वच्छ सखी' नियुक्त करने जा रहा है। प्रत्येक स्वच्छ सखी लगभग 300 परिवारों के साथ समन्वय स्थापित कर घर-घर कचरा संग्रहण और स्वच्छता संबंधी जागरूकता का कार्य करेगी। यह पहल महिला सशक्तिकरण और स्वच्छता दोनों उद्देश्यों को एक साथ आगे बढ़ाएगी।

उपयोगकर्ता शुल्क में भी राहत : नागरिकों को स्वच्छता अभियान से जोड़ने के लिए नगर निगम ने घर-घर कचरा संग्रहण सेवा का मासिक शुल्क 50 रुपए से घटाकर 30 रुपए कर दिया है। उम्मीद की जा रही है कि इससे अधिक परिवार इस सेवा से जुड़ेंगे और शहर में कचरा प्रबंधन व्यवस्था मजबूत होगी।

जनभागीदारी से बदलेगी महानगर की तस्वीर : नगर निगम का मानना है कि स्वच्छता की संस्कृति केवल सरकारी प्रयासों से नहीं बल्कि नागरिकों की सक्रिय भागीदारी से विकसित होती है। यही कारण है कि इस अभियान में स्थानीय समितियों, महिला समूहों और आम नागरिकों को केंद्र में रखा गया है। यदि यह योजना सफल होती है तो आने वाले वर्षों में गुवाहाटी न केवल स्वच्छता के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान बनाएगा, बल्कि बैंगनी रंग से सजी अपनी अनूठी सांस्कृतिक और पर्यावरणीय पहचान के कारण देश के सबसे आकर्षक शहरों में भी शामिल हो सकता है।

संपादकीय

दहकता मणिपुर

मणिपुर में तीन वर्षों से जारी जातीय संघर्ष अब एक नए और अधिक खतरनाक मोड़ पर पहुंच गया है। अब तक मैतेई और कुकी-दो समुदायों के बीच सीमित रहा विवाद नगा समुदाय को भी अपनी चपेट में लेने लगा है। इससे 1990 के दशक के खूनी नगा-कुकी संघर्ष की भयावह यादें फिर ताजा हो गई हैं।

यह संकट केवल जातीय पहचान का नहीं, बल्कि भूमि, अधिकार और अस्तित्व के संघर्ष का परिणाम है। मणिपुर की भूमि व्यवस्था आज भी औपनिवेशिक विरासत और पारंपरिक जनजातीय दावों के बीच उलझी हुई है। घाटी और पहाड़ी क्षेत्रों के लिए अलग-अलग कानूनों ने असमानता और अविश्वास को जन्म दिया है। एक ओर मैतेई समुदाय स्वयं को भूमि अधिकारों के मामले में घिरा हुआ महसूस करता है, तो दूसरी ओर नगा और कुकी समुदाय पारंपरिक स्वामित्व को लेकर आमने-सामने खड़े हैं।

स्थिति को और जटिल बनाते हैं विभिन्न उग्रवादी संगठन, जिनकी गतिविधियों ने वर्षों से सामाजिक ताने-बाने को कमजोर किया है। सुरक्षा बलों और राज्य संस्थाओं की निष्पक्षता पर उठते सवाल भी जनता के बीच अविश्वास बढ़ा रहे हैं। मणिपुर की समस्या का समाधान केवल सैन्य या प्रशासनिक उपायों से संभव नहीं है। इसके लिए भूमि अधिकारों, जनजातीय दावों और राजनीतिक प्रतिनिधित्व पर व्यापक संवाद की आवश्यकता है। केंद्र और राज्य सरकार को निष्पक्ष मध्यस्थ की भूमिका निभानी होगी। कानून का शासन ही सर्वोपरि होना चाहिए, न कि किसी समुदाय या संगठन की शक्ति।

यदि समय रहते ठोस पहल नहीं की गई, तो मणिपुर का यह संकट केवल राज्य की शांति ही नहीं, बल्कि पूर्वोत्तर की स्थिरता के लिए भी गंभीर चुनौती बन सकता है।

सुलगता सवाल ? आपके विचार

शिक्षा और रोजगार की खाई

भारत में बढ़ती बेरोजगारी का कारण केवल नौकरियों की कमी नहीं, बल्कि शिक्षा और रोजगार के बीच बढ़ती खाई भी है। वर्षों से हमारे विश्वविद्यालय और महाविद्यालय ऐसे पाठ्यक्रम पढ़ा रहे हैं जो बदलती दुनिया और उद्योगों की जरूरतों के अनुरूप नहीं हैं। परिणामस्वरूप लाखों युवा डिग्री तो प्राप्त कर लेते हैं, लेकिन रोजगार के लिए आवश्यक कौशल से वंचित रह जाते हैं।

आज भी शिक्षा व्यवस्था रटंत प्रणाली, परीक्षा-केंद्रित अध्ययन और पुराने पाठ्यक्रमों पर आधारित है। संचार कौशल, तकनीकी दक्षता, डेटा विश्लेषण, समस्या समाधान और उद्यमिता जैसे गुणों पर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया जाता। यही कारण है कि अनेक प्रतिष्ठित संस्थानों के स्नातक भी रोजगार बाजार की अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतर पाते। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इस समस्या का समाधान प्रस्तुत किया है। परियोजना आधारित शिक्षा, बहुविषयक अध्ययन और कौशल विकास पर उसका जोर स्वागतयोग्य है। हालांकि इसकी प्रभावी क्रियान्विति अभी भी बड़ी चुनौती बनी हुई है। यदि भारत को युवा शक्ति का लाभ उठाना है, तो शिक्षा को डिग्री नहीं, दक्षता और रोजगार से जोड़ना होगा। यही आत्मनिर्भर और विकसित भारत की वास्तविक आधारशिला होगी।

कर्नाटक में बदलाव

जन जन विचार
...✍ रशीद किदवई

कर्नाटक की राजनीति में महीनों से चल रही अटकलों, खंडन-मंडन और दिल्ली में हुई गुप्त बैठकों के सिलसिले पर 28 मई की सुबह तब विराम लग गया, जब मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने डीके शिवकुमार के साथ ब्रेकफास्ट मीटिंग में अपने इस्तीफे की पुष्टि की। 30 मई को कांग्रेस विधायक दल का नेता चुने जाने के साथ ही डीके शिवकुमार का कर्नाटक का अगला मुख्यमंत्री बनना तय हो गया। बीते कुछ वर्षों की राजनीति में मुख्यमंत्रियों को बदलने में भाजपा ने महारत हासिल कर ली है। इसके विपरीत, कांग्रेस का मॉडल बेहद धीमा और कशमकश से भरा होता है। कर्नाटक में ऐसा ही हुआ है। सिद्धारमैया को सम्मानजनक विदाई और उनकी जगह डीके शिवकुमार को राज्य की कमान सौंपा जाना कांग्रेस की इसी पारंपरिक शैली का हिस्सा है। अलबत्ता, यह एक नई शुरुआत की ओर भी इशारा करता है। स्पष्ट है कि राहुल गांधी अब उन मामलों में भी निर्णायक कदम उठाने के लिए तैयार हैं, जहां पहले वह आम सहमति बनाने के नाम पर उन्हें लंबे समय तक लटकाए रखते थे।

पर पार्टी ने एक जमे-जमाये कद्दावर नेता को हटाकर कोई सियासी जोखिम तो मोल नहीं ले ली? राजनीतिक पंडित इसे एक ऐसा सोचा-समझा जोखिम मान रहे हैं, जिसे लेना कांग्रेस के लिए अपरिहार्य भी हो गया था।

कांग्रेस के लिए चुनौतियां 2023 में उसी दिन शुरू हो गयी थीं, जिस दिन उसने कर्नाटक विधानसभा चुनाव में शानदार जीत हासिल की थी। उसे 224 सदस्यीय विधानसभा में 135 सीटों पर जीत मिली थी, जो बीते कई दशकों में पार्टी का सबसे शानदार प्रदर्शन था। पर उस जीत के भीतर एक अंतर्विरोध भी छिपा था। सिद्धारमैया के पास जनाधार और व्यापक सामाजिक गठबंधन था, जबकि डीके शिवकुमार संगठनात्मक ताकत से लैस थे और राज्य में शीर्ष पद के लिए उनकी सबसे मजबूत दावेदारी भी थी। ऐसे में, आलाकमान को समझौता करवाना पड़ा। इसके तहत सिद्धारमैया मुख्यमंत्री बने और शिवकुमार को उपमुख्यमंत्री की जिम्मेदारी मिली। दोनों के बीच सत्ता के रोटेशन को लेकर ढाई-ढाई साल का कोई समझौता हुआ या नहीं, इस बारे में भ्रम बना रहा।

> हालांकि यह कहना मुनासिब नहीं कि सभी विधायक अचानक डीके शिवकुमार के समर्थक बन जाएंगे, पर अनेक विधायकों ने यह संकेत जरूर दिया है कि वे कांग्रेस के भविष्य की खातिर आलाकमान का फैसला स्वीकार करने के लिए तैयार हैं। फिर भी सिद्धारमैया के लोकप्रिय जनाधार के बीच अपनी जगह बनाना शिवकुमार के लिए आसान नहीं।

अब जब अगले विधानसभा चुनाव में दो साल से भी कम का वक्त रह गया है, तब शिवकुमार के सामने सबसे बड़ी चुनौती सिद्धारमैया के समर्थक विधायकों को अपने साथ दिखाने की मानी जा रही है। लेकिन यहां पर एक पेच भी है। दरअसल, यह मान लिया जाता है कि कांग्रेस शासित राज्यों में विधायक किसी न किसी गुट के स्थायी सदस्य होते हैं। पर हकीकत इससे अधिक जटिल है। कांग्रेस के विधायक अपेक्षाकृत अधिक लचीले, सतर्क और दिल्ली से मिलने वाले राजनीतिक संकेतों के प्रति संवेदनशील होते हैं। जब कोई मुख्यमंत्री लोकप्रिय दिखाई देता है और चुनाव जिताने की क्षमता रखता है, तब अधिकांश विधायक उसके साथ खड़े नजर आते हैं। पर जैसे ही उन्हें संकेत मिलने लगते हैं कि पार्टी हाईकमान मुख्यमंत्री की राजनीतिक उपयोगिता को तौलने लगा है, उनका व्यवहार बदलने लगता है।

हालांकि यह कहना मुनासिब नहीं कि सभी विधायक अचानक डीके शिवकुमार के समर्थक बन जाएंगे, पर अनेक विधायकों ने यह संकेत जरूर दिया है कि वे कांग्रेस के भविष्य की खातिर आलाकमान का फैसला स्वीकार करने के लिए तैयार हैं। फिर भी सिद्धारमैया के लोकप्रिय जनाधार के बीच अपनी जगह बनाना शिवकुमार के लिए आसान नहीं। पिछड़े वर्गों, दलितों और अल्पसंख्यकों को जोड़ने वाली सिद्धारमैया की 'अहिंदा' राजनीति ने कांग्रेस को 2023 में ऐतिहासिक जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाई थी। उनकी गारंटी योजनाएं आज भी सरकार की सबसे बड़ी राजनीतिक पूंजी हैं। ऐसे नेता को कार्यकाल के बीच में हटाने पर अगर कोई असंतोष पैदा होता है, तो उससे शिवकुमार कैसे निपटेंगे, यह देखने वाली बात होगी।

यह एक राज्य में केवल सत्ता परिवर्तन की कहानी नहीं है, बल्कि राहुल गांधी के नजरिये में बदलाव की भी दास्तान है, जो चार मई के बाद और स्पष्ट होकर सामने आई है। उस दिन दक्षिण भारत के सियासी कैनवास ने कांग्रेस को एक नई दिशा दिखाई। केरल में कांग्रेस-नीत गठबंधन सत्ता में शानदार वापसी करने में सफल रहा। वहीं तमिलनाडु में विजय की टीवीके जब सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी, तब कांग्रेस ने वहां अतीत की पुरानी यादों में खोये रहने के बजाय व्यावहारिक राजनीति को चुना, जिसके चलते पार्टी दशकों बाद राज्य में दो कैबिनेट मंत्रियों के साथ नई सरकार का हिस्सा बनी।

दरअसल, राहुल गांधी को अहसास हो गया है कि कांग्रेस दक्षिण भारत में चुनाव जीत सकती है, व्यावहारिक राजनीति के जरिए सरकारों में भागीदारी कर सकती है, वरिष्ठ नेताओं के बीच संतुलन बना सकती है और युवा मतदाताओं से भी संवाद स्थापित कर सकती है। कर्नाटक की राजनीति आगे किस करवट बैठती है, यह तो वक्त बताएगा, मगर संदेश साफ है कि सिद्धारमैया ने अपनी पारी खेल ली है। अब बारी शिवकुमार की है। राहुल गांधी भी शायद लंबे अरसे के बाद ऐसे नेता के रूप में नजर आ रहे हैं, जो कांग्रेस को यह याद दिलाने के लिए तैयार हैं कि राजनीति में सही समय पर लिया गया निर्णय ही सबसे बड़ी राजनीतिक पूंजी है।

ममता का साथ हो गया 'खेला'

जन जन विचार
...✍ कोलकाता

पश्चिम बंगाल की राजनीति में एक बड़ा भूचाल आ गया है। विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी से मिली करारी हार के बाद तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के भीतर शुरू हुआ असंतोष अब खुले विद्रोह में बदलता दिखाई दे रहा है। 3 जून को घटनाक्रम ने तब नाटकीय मोड़ ले लिया जब विधानसभा अध्यक्ष रथींद्र बोस ने टीएमसी के बागी नेता रितब्रत बनर्जी को विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष के रूप में मान्यता दे दी। इतना ही नहीं, विपक्ष के लिए आवंटित कार्यालय की चाबियां भी उन्हें सौंप दी गईं।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह घटनाक्रम टीएमसी के इतिहास के सबसे बड़े संकट का संकेत है। पार्टी के भीतर ममता बनर्जी और उनके भतीजे अभिषेक बनर्जी की कार्यशैली को लेकर लंबे समय से असंतोष पनप रहा था, जो अब खुलकर सामने आ गया है। सूत्रों के अनुसार, ममता बनर्जी के आवास पर बुलाई गई महत्वपूर्ण बैठक में 80 में से लगभग 60 विधायक अनुपस्थित रहे। इसे पार्टी नेतृत्व के खिलाफ अभूतपूर्व अवज्ञा माना जा रहा है।

संकट उस समय और गहरा गया जब कोलकाता के मेयर तथा ममता बनर्जी के करीबी सहयोगी फिरहाद हकीम ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया। हालांकि पार्टी नेताओं का कहना है कि उन्होंने ममता बनर्जी की अनुमति से इस्तीफा दिया है, लेकिन राजनीतिक गलियारों में इसे टीएमसी के भीतर बढ़ती अस्थिरता का संकेत माना जा रहा है।

उधर, बागी खेमे को लेकर अटकलों का दौर तेज है। पूर्व मंत्री और एजेयूपी प्रमुख हुमायूं कबीर ने दावा किया कि 'खेला अब शुरू हुआ है' और टीएमसी के भीतर बड़ी टूट की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता।

भारतीय जनता पार्टी ने भी इस घटनाक्रम को टीएमसी शासन की विफलता का परिणाम बताया है। भाजपा नेताओं का कहना है कि पार्टी के भीतर लोकतांत्रिक व्यवस्था के अभाव और परिवारवाद के कारण यह स्थिति पैदा हुई है।

राजनीतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि यदि बागी विधायकों की संख्या इसी तरह बनी रहती है तो टीएमसी के अस्तित्व पर गंभीर सवाल खड़े हो सकते हैं। पश्चिम बंगाल की राजनीति में यह संकट आने वाले दिनों में और गहरा सकता है तथा राज्य की सत्ता और विपक्ष दोनों की राजनीति को नई दिशा दे सकता है।

फिलहाल सभी की नजरें ममता बनर्जी और अभिषेक बनर्जी की अगली रणनीति पर टिकी हैं। सवाल यह है कि क्या टीएमसी इस संकट से उबर पाएगी या पश्चिम बंगाल की राजनीति में एक नए अध्याय की शुरुआत होने जा रही है।

कुवैत में ईरानी हमले में भारतीय की मौत

वॉशिंगटन/कुवैत। पश्चिम एशिया में जारी तनाव के बीच कुवैत में हुए एक हमले में एक भारतीय नागरिक की मौत हो गई, जबकि कई अन्य लोग घायल हो गए। कुवैत स्थित भारतीय दूतावास ने घटना की पुष्टि करते हुए मृतक के परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त की है। भारतीय राजदूत प्रमीता त्रिपाठी ने अस्पताल पहुंचकर घायलों का हालचाल जाना तथा मृतक के पार्थिव शरीर को भारत भेजने की प्रक्रिया शुरू कर दी है।

जानकारी के अनुसार, कुवैत अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के टर्मिनल-1 को निशाना बनाकर किए गए हमले में कम से कम 63 लोग घायल हुए। इसके बाद कुवैत प्रशासन ने सुरक्षा कारणों से हवाई सेवाओं को अस्थायी रूप से निलंबित कर दिया। ईरान की रिवोल्यूशनरी गार्ड्स (आईआरजीसी) ने हमले की जिम्मेदारी लेते हुए इसे अमेरिकी कार्रवाई के जवाब में उठाया गया कदम बताया है। आईआरजीसी का दावा है कि अमेरिकी हमलों के प्रतिरोध में कुवैत और बहरीन स्थित अमेरिकी सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया गया।

इस बीच अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की नीति पर भी सवाल उठ रहे हैं। अमेरिकी मीडिया के अनुसार ट्रंप प्रशासन का कहना है कि जब तक किसी अमेरिकी सैनिक की मौत नहीं होती, तब तक ईरान के खिलाफ व्यापक सैन्य कार्रवाई की संभावना नहीं है। आलोचकों का आरोप है कि यह नीति क्षेत्र में अन्य देशों के नागरिकों की सुरक्षा को लेकर दोहरे मानदंड दर्शाती है।

मालवीय नगर अग्निकांड
21 मौतों का जिम्मेदार कौन

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

दक्षिण दिल्ली के साकेत स्थित हौज रानी इलाके में हुए भीषण अग्निकांड ने राजधानी की प्रशासनिक व्यवस्था, निगरानी तंत्र और सुरक्षा मानकों की पोल खोलकर रख दी है। इस हादसे में 21 लोगों की मौत हुई, जिनमें अधिकांश विदेशी नागरिक बताए जा रहे हैं। लेकिन यह केवल आग से हुई मौतों की कहानी नहीं है, बल्कि उन सवालों की कहानी है जिनका जवाब अब पूरा देश मांग रहा है।

प्रारंभिक जानकारी के अनुसार जिस भवन को केवल छह कमरों वाले गेस्ट हाउस के रूप में अनुमति मिली थी, उसे कथित रूप से छह मंजिला होटल में बदल दिया गया। यहां 26 कमरे संचालित किए जा रहे थे और साथ ही रेस्टोरेंट भी चल रहा था। हादसे के समय भवन में 80 से 100 लोगों के मौजूद होने की बात सामने आई है।

सबसे बड़ा सवाल यह है कि यदि भवन को छह कमरों की अनुमति थी, तो वह 26 कमरों तक कैसे पहुंच गया? क्या नगर निगम को इसकी जानकारी नहीं थी? क्या फायर विभाग ने कभी निरीक्षण नहीं किया? क्या स्थानीय प्रशासन और पुलिस को इसकी भनक तक नहीं लगी?

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार आग लगने के बाद कई लोगों को अपनी जान बचाने के लिए ऊपरी मंजिलों से कूदना पड़ा। इससे स्पष्ट संकेत मिलता है कि आपातकालीन निकासी व्यवस्था या तो मौजूद नहीं थी या पूरी तरह विफल रही। फायर अलार्म, स्प्रिंकलर सिस्टम, अग्निशामक यंत्र और सुरक्षित निकास मार्ग जैसे बुनियादी सुरक्षा उपाय भी सवालों के घेरे में हैं।

विशेषज्ञों का मानना है कि इस मामले में केवल भवन मालिक को दोषी ठहराकर जिम्मेदारी से बचा नहीं जा सकता। यदि अवैध निर्माण हुआ तो नगर निगम की जवाबदेही बनती है। यदि फायर एनओसी के बिना प्रतिष्ठान चल रहा था तो अग्निशमन विभाग की भूमिका पर सवाल उठेंगे। यदि लाइसेंस शर्तों का उल्लंघन हो रहा था तो स्थानीय प्रशासन और पुलिस की निगरानी व्यवस्था भी कठघरे में खड़ी होगी।

यह हादसा उस व्यवस्था की विफलता का प्रतीक बन गया है जहां नियम कागजों तक सीमित रह जाते हैं और निरीक्षण केवल औपचारिकता बनकर रह जाता है। सवाल केवल यह नहीं है कि आग कैसे लगी, बल्कि यह भी है कि इतने बड़े पैमाने पर नियमों की अनदेखी आखिर वर्षों तक कैसे चलती रही। मालवीय नगर अग्निकांड महज एक दुर्घटना नहीं, बल्कि प्रशासनिक लापरवाही, भ्रष्ट निगरानी व्यवस्था और नियमों के खुले उल्लंघन का भयावह परिणाम प्रतीत होता है। यदि छह कमरों की अनुमति वाला गेस्ट हाउस छह मंजिला होटल बन गया और किसी विभाग को इसकी जानकारी नहीं हुई, तो यह केवल एक संस्थान की नहीं बल्कि पूरे तंत्र की असफलता है। 21 मौतों की जिम्मेदारी तय किए बिना न्याय अधूरा रहेगा। जांच का दायरा आग लगने के कारणों तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि उन सभी अधिकारियों और विभागों तक पहुंचना चाहिए जिनकी चुप्पी या लापरवाही ने इस त्रासदी को संभव बनाया।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

विश्व पर्यावरण दिवस से शुरू...

सम्मेलन में इसकी घोषणा करते हुए कहा कि यह अभियान गुवाहाटी को असम की प्राकृतिक और सांस्कृतिक पहचान से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

अभियान का शुभारंभ सुबह 7 बजे दिसपुर क्लॉक टावर के नीचे अजार (क्वीन्स क्रेप मर्टल) के पौधे लगाकर किया जाएगा। यह पहल मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा की उस परिकल्पना का हिस्सा है, जिसके तहत गुवाहाटी को 'पर्पल सिटी' के रूप में राष्ट्रीय पहचान दिलाने का प्रयास किया जा रहा है।

विधायक बरदलै ने बताया कि अभियान के अंतर्गत असम के पारंपरिक एवं स्वदेशी पौधों जैसे अजार, कांचन तथा राज्य पुष्प कोपौ (फॉक्सटेल ऑर्किड) को शहर के विभिन्न क्षेत्रों में लगाया जाएगा। प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में एक लाख पौधे लगाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

उन्होंने कहा कि वृक्षारोपण केवल पहाड़ी क्षेत्रों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि सिलसाको, दीपर बील सहित आर्द्रभूमियों और पर्यावरणीय दृष्टि से संवेदनशील क्षेत्रों को भी इसमें शामिल किया जाएगा। नागरिकों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए लोगों को नि:शुल्क अजार के पौधे भी वितरित किए जाएंगे।

बरदलै ने अजार वृक्ष के ऐतिहासिक और पर्यावरणीय महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आहोम काल में मुगलों के विरुद्ध युद्धों में प्रयुक्त नौकाओं के निर्माण में इसी लकड़ी का उपयोग किया जाता था। इसके अलावा औपनिवेशिक काल में रेलवे स्लीपर बनाने में भी इसका इस्तेमाल हुआ था। उन्होंने बताया कि अजार की पत्तियों में पाए जाने वाले 'कोरोसोलिक एसिड' का उपयोग रक्त में शर्करा के स्तर को नियंत्रित करने में किया जाता है।

उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि जब पूरे महानगर में अजार के वृक्ष फूलों से लद जाएंगे, तब गुवाहाटी की सुंदरता और पहचान दोनों में नया आयाम जुड़ेगा।

विधायक ने यह भी कहा कि पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ दिसपुर क्षेत्र में जलभराव और पेयजल संकट जैसी समस्याओं के समाधान के प्रयास जारी रहेंगे। साथ ही शहर के फुटपाथों, नालों और जल निकासी मार्गों पर हुए अतिक्रमण को हटाने की कार्रवाई भी तेज की जाएगी।

एआई का दौर : नौकरियां जाएंगी या बढ़ेंगे मौके

जन जन विचार
...✍ करियर डेस्क

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) आज दुनिया की सबसे चर्चित तकनीकों में से एक बन चुकी है। शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग, उद्योग, मीडिया और संचार जैसे लगभग हर क्षेत्र में इसका प्रभाव दिखाई देने लगा है। जहां एक ओर यह तकनीक काम को आसान, तेज और अधिक प्रभावी बना रही है, वहीं दूसरी ओर छात्रों और युवाओं के मन में एक बड़ा सवाल भी खड़ा हो रहा है–क्या कृत्रिम बुद्धिमत्ता भविष्य में उनकी नौकरियां छीन लेगी?

हाल ही में गूगल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुंदर पिचाई ने इस चिंता को उचित बताया। उन्होंने स्वीकार किया कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता को लेकर लोगों के मन में जो आशंकाएं हैं, वे स्वाभाविक हैं। लेकिन साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि यह तकनीक केवल नौकरियां समाप्त नहीं करेगी, बल्कि नए अवसरों के द्वार भी खोलेगी।

सुंदर पिचाई का मानना है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण तकनीकों में से एक है। जब भी कोई नई और क्रांतिकारी तकनीक आती है, समाज में चिंता और असमंजस की स्थिति पैदा होती है। अतीत में भी ऐसा कई बार हुआ है। औद्योगिक क्रांति के समय मशीनों के आगमन से लोगों को लगा था कि रोजगार समाप्त हो जाएंगे। बाद में कंप्यूटर और इंटरनेट के आने पर भी इसी प्रकार की आशंकाएं व्यक्त की गई थीं। लेकिन इतिहास बताता है कि नई तकनीकों ने पुराने रोजगारों में बदलाव तो किया, पर साथ ही लाखों नए रोजगार भी पैदा किए।

आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता भी उसी प्रकार के परिवर्तन का माध्यम बन रही है। अनेक ऐसे कार्य, जो बार-बार दोहराए जाते हैं और जिनमें रचनात्मकता की आवश्यकता कम होती है, उन्हें मशीनें और स्वचालित प्रणालियां आसानी से कर सकती हैं। इससे कुछ पारंपरिक नौकरियों पर प्रभाव पड़ सकता है। लेकिन दूसरी ओर कृत्रिम बुद्धिमत्ता विशेषज्ञ, आंकड़ा विश्लेषक, मशीन अधिगम अभियंता, साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ, डिजिटल सामग्री निर्माता, रोबोटिक्स विशेषज्ञ और तकनीकी सलाहकार जैसे नए रोजगार तेजी से उभर रहे हैं।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भविष्य में मनुष्य और मशीन के बीच प्रतिस्पर्धा नहीं बल्कि सहयोग का संबंध विकसित होगा। जो लोग कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग करना सीख जाएंगे, वे अधिक सक्षम और उत्पादक बन सकेंगे। इसलिए चुनौती तकनीक से डरने की नहीं, बल्कि उसे समझने और उसके अनुरूप स्वयं को तैयार करने की है।

छात्रों के लिए यह समय विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। पारंपरिक शिक्षा प्रणाली लंबे समय से रटने और परीक्षा केंद्रित अध्ययन पर आधारित रही है। लेकिन कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में केवल जानकारी याद रखना पर्याप्त नहीं होगा, क्योंकि जानकारी तो कुछ ही क्षणों में उपलब्ध हो जाएगी। भविष्य में रचनात्मक सोच, समस्या समाधान की क्षमता, संवाद कौशल, नेतृत्व क्षमता और नवाचार की भावना अधिक महत्वपूर्ण होगी।

भारत जैसे युवा देश के लिए यह परिवर्तन एक बड़ी संभावना भी लेकर आया है। देश की विशाल युवा आबादी यदि समय रहते नई तकनीकों का प्रशिक्षण प्राप्त कर लेती है, तो भारत कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में विश्व का अग्रणी केंद्र बन सकता है। इसके लिए विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में आधुनिक पाठ्यक्रमों को बढ़ावा देना होगा तथा तकनीकी कौशल विकास पर विशेष ध्यान देना होगा।

हालांकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढ़ते प्रभाव के साथ कुछ चुनौतियां भी सामने आएंगी। रोजगार के स्वरूप में बदलाव, डिजिटल असमानता, निजता की सुरक्षा और तकनीक के नैतिक उपयोग जैसे मुद्दों पर सरकारों, उद्योगों और समाज को गंभीरता से विचार करना होगा। यह सुनिश्चित करना आवश्यक होगा कि तकनीक का लाभ समाज के हर वर्ग तक पहुंचे और कोई भी समुदाय विकास की दौड़ में पीछे न रह जाए।

सुंदर पिचाई का संदेश स्पष्ट है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता को केवल खतरे के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। यह एक ऐसा साधन है जो मानव क्षमता को बढ़ाने और नई संभावनाओं को जन्म देने में सक्षम है। आने वाला समय उन्हीं लोगों का होगा जो परिवर्तन को स्वीकार करेंगे, नई चीजें सीखेंगे और तकनीक का रचनात्मक उपयोग करेंगे।

निस्संदेह कृत्रिम बुद्धिमत्ता दुनिया को बदल रही है। लेकिन असली प्रश्न यह नहीं है कि यह परिवर्तन होगा या नहीं, बल्कि यह है कि हम इस परिवर्तन के लिए कितने तैयार हैं। यदि सही दिशा में प्रयास किए जाएं, तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता रोजगार संकट नहीं, बल्कि नए अवसरों और उज्ज्वल भविष्य का आधार बन सकती है।

बिहार पुलिस में 37,978 पदों पर होगी बहाली

जन जन विचार
...✍ पटना

बिहार में सरकारी नौकरी की तैयारी कर रहे युवाओं के लिए बड़ी खुशखबरी है। राज्य में पुलिस बल को मजबूत बनाने के उद्देश्य से सिपाही से लेकर दरोगा तक कुल 37,978 पदों पर भर्ती की घोषणा की गई है। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) बिहार द्वारा साझा की गई जानकारी के अनुसार यह भर्ती अभियान राज्य के युवाओं को रोजगार के नए अवसर प्रदान करेगा।

घोषणा के अनुसार 27,510 सिपाही एवं समकक्ष पदों पर नियुक्तियां की जाएंगी। इनमें 22,010 सिपाही और 5,500 चालक सिपाही के पद शामिल हैं। इसके अलावा दरोगा (सब-इंस्पेक्टर) के कुल 20,937 पदों में से 10,468 पदों पर सीधी भर्ती की जाएगी, जबकि 10,469 पदों को पदोन्नति के माध्यम से भरा जाएगा।

रोजी-रोजगार

सरकार का कहना है कि इस भर्ती अभियान से पुलिस विभाग में लंबे समय से खाली पड़े पदों को भरा जा सकेगा और कानून-व्यवस्था को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकेगा। साथ ही हजारों युवाओं को सरकारी सेवा में आने का अवसर मिलेगा।

हालांकि भर्ती प्रक्रिया से संबंधित विस्तृत अधिसूचना, आवेदन तिथि, शैक्षणिक योग्यता, आयु सीमा और चयन प्रक्रिया की जानकारी अभी जारी नहीं की गई है। अभ्यर्थियों को आधिकारिक विज्ञापन जारी होने का इंतजार करना होगा। राज्य में लंबे समय से बड़ी पुलिस भर्ती की मांग कर रहे युवाओं के लिए यह घोषणा रोजगार के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण अवसर मानी जा रही है।

एम्स गुवाहाटी में 129 पदों पर भर्ती

गुवाहाटी। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) गुवाहाटी ने सीनियर रेजिडेंट (गैर-शैक्षणिक) और सीनियर डेमोंस्ट्रेटर के 129 पदों पर भर्ती के लिए आवेदन आमंत्रित किए हैं। इच्छुक और पात्र अभ्यर्थी 15 जून 2026 तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

भर्ती के लिए चिकित्सा अभ्यर्थियों के पास संबंधित विषय में एमडी, एमएस, डीएनबी अथवा समकक्ष स्नातकोत्तर डिग्री होना आवश्यक है। दंत चिकित्सा अभ्यर्थियों के लिए ओरल एंड मैक्सिलोफेशियल सर्जरी में एमडीएस डिग्री अनिवार्य है। वहीं गैर-चिकित्सा अभ्यर्थियों के पास शरीर रचना विज्ञान, शरीर क्रिया विज्ञान, जैव रसायन, सूक्ष्मजीव विज्ञान अथवा औषध विज्ञान जैसे विषयों में एमएससी और पीएचडी की योग्यता होनी चाहिए।

ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि तक अभ्यर्थी की अधिकतम आयु 45 वर्ष निर्धारित की गई है।

विश्व पर्यावरण दिवस

हर वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। इस दिन का उद्देश्य लोगों को पर्यावरण के महत्व के प्रति जागरूक करना और प्रकृति की रक्षा के लिए प्रेरित करना है। स्वच्छ और सुरक्षित पर्यावरण हमारे जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है। हमें शुद्ध वायु, स्वच्छ जल, भोजन और रहने योग्य वातावरण प्रकृति से ही प्राप्त होता है।

आज बढ़ते प्रदूषण, वनों की कटाई और प्लास्टिक के अत्यधिक उपयोग के कारण पर्यावरण को गंभीर नुकसान पहुंच रहा है। इसका प्रभाव जलवायु परिवर्तन, बढ़ते तापमान और प्राकृतिक आपदाओं के रूप में दिखाई दे रहा है। यदि हम समय रहते पर्यावरण की रक्षा नहीं करेंगे, तो आने वाली पीढ़ियों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।

बच्चों की भूमिका पर्यावरण संरक्षण में बहुत महत्वपूर्ण है। वे छोटी-छोटी आदतों को अपनाकर बड़ा बदलाव ला सकते हैं। जैसे पेड़-पौधे लगाना, पानी और बिजली की बचत करना, प्लास्टिक का कम उपयोग करना तथा अपने आसपास सफाई बनाए रखना। इसके साथ ही वे अपने परिवार और मित्रों को भी पर्यावरण के प्रति जागरूक कर सकते हैं।

विश्व पर्यावरण दिवस हमें यह संदेश देता है कि पृथ्वी हमारी साझा धरोहर है और इसकी सुरक्षा करना हम सभी का कर्तव्य है। यदि हम आज से ही पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रयास करें, तो एक स्वच्छ, हरित और स्वस्थ भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

आइए, इस विश्व पर्यावरण दिवस पर हम सभी पर्यावरण की रक्षा करने और प्रकृति को सुरक्षित रखने का संकल्प लें।

आईपीएल 2026 : आरसीबी ने बनाई जीत की संस्कृति

जन जन विचार
...✍ स्पोर्टस डेस्क

एक समय था जब इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) का नाम आते ही क्रिकेट प्रेमियों के बीच मजाक और निराशा की चर्चा शुरू हो जाती थी। विराट कोहली, एबी डिविलियर्स और क्रिस गेल जैसे दिग्गज खिलाड़ियों के बावजूद टीम ट्रॉफी जीतने में असफल रही। लेकिन पिछले दो वर्षों में कहानी पूरी तरह बदल गई है। लगातार दो खिताब जीतकर आरसीबी अब आईपीएल की सबसे सफल और संतुलित टीमों में गिनी जा रही है।

इस बदलाव के पीछे केवल खिलाड़ियों का प्रदर्शन नहीं, बल्कि एक ऐसी क्रिकेट संस्कृति है जिसे टीम प्रबंधन ने वर्षों की मेहनत से विकसित किया है। आरसीबी के क्रिकेट निदेशक मो बॉबट इसे 'अनंत लक्ष्य' कहते हैं। उनका मानना है कि एक ट्रॉफी जीतना अंतिम मंजिल नहीं, बल्कि उत्कृष्टता की निरंतर तलाश ही किसी महान टीम की पहचान होती है।

आरसीबी की इस यात्रा की शुरुआत 2024 के कठिन दौर से हुई। उस सीजन में टीम शुरुआती आठ मैचों के बाद अंक तालिका में सबसे नीचे थी। आलोचनाएं हो रही थीं और प्लेऑफ की उम्मीद लगभग खत्म हो चुकी थी। लेकिन वहीं से टीम ने आत्मविश्लेषण

किया और अपनी रणनीति में बड़े बदलाव किए। लगातार छह मैच जीतकर प्लेऑफ में पहुंचने वाली आरसीबी ने उसी समय भविष्य की सफलता की नींव रख दी थी।

मुख्य कोच एंडी फ्लावर के अनुसार, टीम की सफलता का सबसे बड़ा कारण सही खिलाड़ियों का चयन और मजबूत स्काउटिंग सिस्टम है। मेगा ऑक्शन से पहले आरसीबी ने केवल बड़े नामों के पीछे भागने के बजाय ऐसे खिलाड़ियों को चुना जो दबाव की परिस्थितियों में प्रदर्शन कर सकें। भुवनेश्वर कुमार, जोश हेजलवुड, कुणाल पांड्या, टिम डेविड, फिल सॉल्ट और देवदत्त पडिक्कल जैसे खिलाड़ियों ने इस सोच को सही साबित किया।

टीम प्रबंधन का मानना है कि केवल प्रतिभा ही नहीं, बल्कि खिलाड़ी का चरित्र भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है। यही कारण है कि आरसीबी ने ऐसे खिलाड़ियों को प्राथमिकता दी जो टीम के माहौल को सकारात्मक बनाए रख सकें और मुश्किल समय में जिम्मेदारी संभाल सकें।

आरसीबी की सफलता का एक महत्वपूर्ण पहलू उसकी टीम संस्कृति भी है। एंडी फ्लावर बताते हैं कि जो खिलाड़ी अंतिम एकादश में जगह नहीं बना पाते, उन्हें भी उतना ही महत्व दिया जाता है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण वेंकटेश अय्यर हैं। पूरे सीजन अधिकांश समय बेंच पर बैठने के बावजूद उन्होंने शिकायत नहीं की और मौका मिलने पर टीम के लिए निर्णायक पारियां खेलीं। यह दर्शाता है कि आरसीबी में हर खिलाड़ी खुद को टीम का महत्वपूर्ण हिस्सा महसूस करता है।

आज के क्रिकेट में डेटा विश्लेषण की भूमिका लगातार बढ़ रही है और आरसीबी ने इसका प्रभावी उपयोग किया है। हालांकि मो बॉबट स्पष्ट करते हैं कि टीम केवल आंकड़ों पर निर्भर नहीं रहती। निर्णय लेने में डेटा के साथ अनुभवी कोचों और विशेषज्ञों की राय को भी समान महत्व दिया जाता है। यही संतुलन आरसीबी को अन्य टीमों से अलग बनाता है।

कप्तान राजत पाटीदार भी इस आधुनिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। स्पिन गेंदबाजों के खिलाफ अपनी बल्लेबाजी को और बेहतर बनाने के लिए उन्होंने टीम के विश्लेषक फ्रेडी वाइल्ड की मदद ली। वीडियो विश्लेषण और तकनीकी अध्ययन के जरिए उन्होंने अपनी कमजोरियों को दूर किया और एक अधिक परिपक्व बल्लेबाज के रूप में उभरे।

आरसीबी की सफलता में विराट कोहली की भूमिका भी बेहद महत्वपूर्ण रही है। 19वें सीजन में भी उनकी भूख और समर्पण कम नहीं हुआ है। टीम प्रबंधन के अनुसार, कोहली केवल रन ही नहीं बनाते बल्कि अपने व्यवहार और कार्यशैली से पूरी टीम के लिए मानक स्थापित करते हैं। मैदान पर उनकी ऊर्जा और जीत की चाह युवा खिलाड़ियों को लगातार प्रेरित करती है।

भुवनेश्वर कुमार और जोश हेजलवुड जैसे अनुभवी खिलाड़ियों ने भी टीम को स्थिरता प्रदान की। दबाव के क्षणों में उनका शांत स्वभाव और अनुभव पूरी टीम में आत्मविश्वास भरता है। यही कारण है कि आरसीबी अब केवल प्रतिभाशाली खिलाड़ियों का समूह नहीं, बल्कि एक संगठित और आत्मविश्वासी इकाई बन चुकी है।

राजत पाटीदार के नेतृत्व में टीम ने न केवल मैच जीते बल्कि कई मुकाबलों में विरोधियों पर पूरी तरह दबदबा भी बनाया। युवा कप्तान को विराट कोहली, दिनेश कार्तिक और अन्य वरिष्ठ खिलाड़ियों का मार्गदर्शन मिला, जिससे उनकी नेतृत्व क्षमता लगातार विकसित हुई।

आरसीबी की कहानी केवल दो ट्रॉफियों की कहानी नहीं है। यह उस संस्कृति की कहानी है जिसमें सीखने, सुधार करने और आगे बढ़ने की निरंतर इच्छा मौजूद है। वर्षों तक उपहास का पात्र बनने वाली यह टीम आज आईपीएल की सबसे मजबूत फ्रेंचाइजी के रूप में उभरी है।

अगर पिछले दो वर्षों का प्रदर्शन कोई संकेत है, तो आरसीबी की मंजिल अभी दूर है। टीम का लक्ष्य केवल खिताब जीतना नहीं, बल्कि ऐसी विरासत बनाना है जो आने वाले वर्षों तक भारतीय क्रिकेट में उत्कृष्टता का उदाहरण बनी रहे।

सब पर भारी सूर्यवंशी का वैभव

जन जन विचार
...✍ स्पोर्टस डेस्क

भारतीय क्रिकेट के इतिहास में समय-समय पर ऐसे खिलाड़ी आए हैं जिन्होंने खेल की परिभाषा बदल दी। कभी 16 वर्ष की उम्र में अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में कदम रखने वाले सचिन तेंदुलकर ने दुनिया को चौंकाया था, तो आज 15 वर्षीय वैभव सूर्यवंशी उसी परंपरा को एक नए रूप में आगे बढ़ाते दिखाई दे रहे हैं। अंतर सिर्फ इतना है कि जिस दौर में सचिन ने शुरुआत की थी, वह टेस्ट और एकदिवसीय क्रिकेट का युग था, जबकि वैभव टी-20 क्रिकेट के सबसे आक्रामक दौर में अपनी पहचान बना रहे हैं।

आईपीएल 2026 में वैभव सूर्यवंशी केवल एक युवा खिलाड़ी के रूप में नहीं, बल्कि पूरे टूर्नामेंट के सबसे बड़े आकर्षण के रूप में उभरे। 15 वर्ष की उम्र में उन्होंने 776 रन बनाकर क्रिकेट विशेषज्ञों, पूर्व खिलाड़ियों और प्रशंसकों को

हैरत में डाल दिया। इससे भी अधिक आश्चर्यजनक उनका 237 का स्ट्राइक रेट रहा, जो किसी भी बल्लेबाज के लिए अविश्वसनीय माना जाता है। यह प्रदर्शन केवल आंकड़ों की कहानी नहीं है, बल्कि उस आत्मविश्वास, तकनीक और मानसिक दृढ़ता का प्रमाण है जो आमतौर पर अनुभवी खिलाड़ियों में देखने को मिलती है।

वैभव की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि उन्होंने किसी भी गेंदबाज के नाम या उपलब्धियों से खुद को प्रभावित नहीं होने दिया। जसप्रीत बुमराह, पैट कमिंस, ट्रेंट बोल्ट और राशिद खान जैसे विश्वस्तरीय गेंदबाजों के सामने भी उन्होंने वही आक्रामक रवैया अपनाया जो घरेलू क्रिकेट में अपनाते रहे थे। क्रिकेट में अक्सर कहा जाता है कि युवा खिलाड़ी प्रतिभा के दम पर आगे बढ़ते हैं, लेकिन महान खिलाड़ी दबाव के क्षणों में खुद को साबित करते हैं। वैभव ने यह साबित कर दिया कि उनमें केवल प्रतिभा ही नहीं, बल्कि बड़े मंच पर प्रदर्शन करने का साहस भी है।

उनकी बल्लेबाजी की सबसे बड़ी ताकत उनका तेज हाथ, शानदार टाइमिंग और खेल को पढ़ने की क्षमता है। विशेषज्ञों का मानना है कि वैभव केवल ताकत के बल पर छक्के नहीं लगाते, बल्कि गेंदबाजों की रणनीति को समझकर जवाब देते हैं। गुजरात टाइटंस के खिलाफ उनके 96 रन की पारी इसका सबसे बड़ा उदाहरण रही, जहां विरोधी टीम ने उन्हें शॉर्ट गेंदों से रोकने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने उसी रणनीति को अपने पक्ष में बदल दिया।

वैभव की सफलता का प्रभाव मैदान तक सीमित नहीं है। उनके प्रदर्शन ने भारतीय क्रिकेट की प्रतिभा खोज प्रणाली को भी नई दिशा दी है। वर्षों से यह धारणा रही कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचने के लिए लंबा घरेलू अनुभव जरूरी है, लेकिन वैभव ने साबित किया कि असाधारण प्रतिभा को जल्दी अवसर देने से भी शानदार परिणाम मिल सकते हैं। यही कारण है कि अब छोटे शहरों, कस्बों और ग्रामीण क्षेत्रों में खेलने वाले युवा खिलाड़ियों पर चयनकर्ताओं और फ्रेंचाइजियों की नजर और अधिक गहराई से पड़ने लगी है।

बिहार जैसे राज्य से निकलकर राष्ट्रीय स्तर पर छा जाना भी अपने आप में बड़ी उपलब्धि है। लंबे समय तक भारतीय क्रिकेट में महानगरों और पारंपरिक क्रिकेट केंद्रों का दबदबा रहा है, लेकिन वैभव की कहानी बताती है कि प्रतिभा किसी भौगोलिक सीमा की मोहताज नहीं होती।

तीसरी बार दूल्हा बनने की तैयारी में आमिर खान!

गौरी स्प्रैट संग जुलाई में हो सकती है शादी

जन जन विचार
...✍ मुंबई

बॉलीवुड के मिस्टर परफेक्शनिस्ट ड्ढद्बह्म ञ्चद्धड्डठ्ठ एक बार फिर अपनी निजी जिंदगी को लेकर सुर्खियों में हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार आमिर खान अपनी पार्टनर त्रड्डह्वह्म्द्ब स्श्चह्म्ड्डह्लह्ल के साथ विवाह बंधन में बंधने की तैयारी कर रहे हैं। बताया जा रहा है कि दोनों की शादी आगामी 5 जुलाई को एक निजी समारोह में हो सकती है।

सूत्रों के अनुसार यह विवाह बेहद सादगीपूर्ण होगा और इसमें केवल परिवार के करीबी सदस्य तथा चुनिंदा मित्र ही शामिल होंगे।

आमिर खान किसी भव्य समारोह के बजाय निजी और पारिवारिक माहौल में शादी करना चाहते हैं।

गौरतलब है कि आमिर खान ने अपने 60वें जन्मदिन के अवसर पर पहली बार गौरी स्प्रैट को सार्वजनिक रूप से मीडिया से परिचित कराया था। इसके बाद से दोनों को कई कार्यक्रमों और आयोजनों में साथ देखा गया है। हाल ही में एक साक्षात्कार में आमिर ने अपने रिश्ते को लेकर कहा था कि वह और गौरी एक-दूसरे को लेकर बेहद गंभीर हैं तथा उनका संबंध काफी मजबूत है। उन्होंने यह भी कहा था कि भावनात्मक रूप से वह खुद को पहले ही गौरी का जीवनसाथी मानते हैं और शादी को औपचारिक रूप देना या न देना समय के साथ तय होगा।

60 वर्षीय आमिर खान और 46 वर्षीय गौरी स्प्रैट के बीच 14 वर्ष का आयु अंतर है। हालांकि दोनों के रिश्ते को लेकर परिवार और करीबी लोगों का समर्थन बताया जा रहा है।

आमिर खान की यह तीसरी शादी होगी। इससे पहले उन्होंने 1986 में रीना दत्ता से विवाह किया था, जिनसे उन्हें दो संतानें—जुनैद और इरा खान—हैं। वर्ष 2002 में दोनों का तलाक हो गया था। इसके बाद 2005 में आमिर ने चद्बह्म्ड्डठ्ठ ऋड्डश्र से शादी की, जिनसे उनका बेटा आजाद है। वर्ष 2021 में दोनों ने आपसी सहमति से अलग होने की घोषणा की थी, हालांकि आज भी दोनों के बीच मित्रतापूर्ण संबंध बने हुए हैं।

फिलहाल आमिर और गौरी की ओर से शादी की तारीख को लेकर कोई आधिकारिक घोषणा नहीं की गई है। ऐसे में प्रशंसकों की निगाहें इस चर्चित जोड़ी की ओर टिकी हुई हैं।

एक महीने का नींबू पानी चैलेंज

जन जन विचार
...✍ हेल्थ डेस्क

गर्मियों में नींबू पानी को सबसे लोकप्रिय और स्वास्थ्यवर्धक पेयों में गिना जाता है। यह न केवल शरीर को तरोताजा रखता है, बल्कि कई महत्वपूर्ण पोषक तत्व भी प्रदान करता है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों के

अनुसार यदि कोई व्यक्ति लगातार एक महीने तक संतुलित मात्रा में नींबू पानी का सेवन करता है, तो उसके शरीर में कई सकारात्मक बदलाव देखने को मिल सकते हैं।

पाचन तंत्र को मिल सकती है मजबूती

नींबू में पाया जाने वाला साइट्रिक एसिड पेट में पाचन रसों के निर्माण को बढ़ावा देता है। इससे भोजन के पाचन में सहायता मिलती है और कब्ज, अपच जैसी समस्याओं से राहत मिल सकती है। भोजन से पहले नींबू पानी पीने से पाचन प्रक्रिया और अधिक सक्रिय हो सकती है।

किडनी स्टोन के खतरे को कर सकता है कम

विशेषज्ञों के अनुसार नींबू में मौजूद साइट्रेट किडनी में पथरी बनने की संभावना को कम करने में मदद कर सकता है। पर्याप्त पानी के साथ नींबू का सेवन शरीर में खनिजों के जमाव को रोकने में सहायक माना जाता है।

बढ़ सकती है विटामिन-सी की मात्रा

नींबू विटामिन-सी का अच्छा स्रोत है। यह पोषक तत्व रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाने, त्वचा को स्वस्थ रखने और शरीर में आयरन के अवशोषण में मदद करता है। नियमित सेवन से शरीर को आवश्यक एंटीऑक्सीडेंट भी प्राप्त होते हैं।

मीठे पेयों का बेहतर विकल्प

सॉफ्ट ड्रिंक्स और अधिक चीनी वाले पेयों के स्थान पर नींबू पानी का सेवन कैलोरी और अतिरिक्त शर्करा की मात्रा कम करने में मदद कर सकता है। इससे वजन नियंत्रण और मधुमेह जैसी समस्याओं के जोखिम को कम करने में सहायता मिल सकती है।

हड्डियों को मिल सकता है लाभ

कुछ अध्ययनों में पाया गया है कि नींबू पानी के साथ कैल्शियम का सेवन करने पर शरीर कैल्शियम को बेहतर तरीके से अवशोषित कर सकता है। इससे हड्डियों की मजबूती बनाए रखने में सहायता मिल सकती है।

हालांकि नींबू पानी के कई लाभ हैं, लेकिन इसका अत्यधिक सेवन कुछ समस्याएं भी पैदा कर सकता है।

'यादें' में कृष्णा भारद्वाज की दमदार एंट्री

मुंबई। सोनी सब के लोकप्रिय शो 'यादें' में अभिनेता कृष्णा भारद्वाज की एंट्री होने जा रही है। वह शो में सतेंद्र तिवारी उर्फ सत्तू का रहस्यमय किरदार निभाएंगे। कहानी के अनुसार सत्तू की स्थिति ने उसके परिवार और डॉक्टरों को उलझन में डाल दिया है। दावा किया जाता है कि वह अपनी दिवंगत पत्नी की आत्मा के प्रभाव में है, जिससे मामला और भी रहस्यमय बन जाता है।

शो में डॉ. देव मेहता की भूमिका निभा रहे इक़बाल खान और उनकी टीम इस अनोखे केस की सच्चाई जानने में जुट जाती है। जांच के दौरान कई चौंकाने वाले खुलासे और अप्रत्याशित मोड़ सामने आते हैं।

'यादें' का प्रसारण सोमवार से शनिवार रात 8 बजे 'सोनी सब' पर किया जाता है।

मलाईदार दही परवल

दही परवल एक ऐसी पारंपरिक भारतीय डिश है जिसमें दही की हल्की खटास, मसालों की खुशबू और परवल की पौष्टिकता का बेहतरीन संगम देखने को मिलता है। यह सब्जी न केवल स्वादिष्ट होती है बल्कि रोजमर्रा के भोजन में नया स्वाद भी जोड़ती है।

आवश्यक सामग्री

250 ग्राम परवल, ¾ कप फेंटा हुआ दही, 2 चम्मच तेल, 2 तेजपत्ता, 6-8 लौंग, ¼ चम्मच हल्दी पाउडर, ½ चम्मच जीरा पाउडर, 1 चम्मच धनिया पाउडर, ¾ चम्मच लाल मिर्च पाउडर, ½ चम्मच अदरक-लहसुन पेस्ट, नमक स्वादानुसार

बनाने की विधि

सबसे पहले परवल को अच्छी तरह धोकर उसकी ऊपरी परत को हल्का खुरच लें और लंबाई में दो हिस्सों में काट लें। कड़ाही में तेल गर्म कर तेजपत्ता और लौंग का तड़का लगाएं। इसके बाद परवल और नमक डालकर 7-8 मिनट तक ढककर पकाएं।

अब हल्दी, जीरा, धनिया और लाल मिर्च पाउडर डालकर अच्छी तरह मिलाएं। मसालों को जलने से बचाने के लिए थोड़ा पानी डालें और फिर अदरक-लहसुन का पेस्ट मिलाकर कुछ मिनट तक पकाएं।

आंच धीमी करके फेंटा हुआ दही डालें और लगातार चलाते रहें ताकि दही फटे नहीं। सब्जी को तब तक पकाएं जब तक परवल नरम न हो जाए और ग्रेवी से तेल अलग दिखाई न देने लगे।

दही परवल की यह मलाईदार सब्जी रोटी, पराठा या जीरा राइस के साथ बेहद स्वादिष्ट लगती है। अगर आपके घर में परवल पसंद नहीं किया जाता, तो एक बार यह दही परवल बनाकर जरूर खिलाइए। संभव है कि जो लोग परवल से दूरी बनाकर रखते थे, वही इसकी तारीफ करते नजर आएं।

पूर्वांचल प्रिंटर्स की ओर से राजनाथ पाल द्वारा जीएमसीएच रोड, हरबाला मार्केट, भांगागढ़, गुवाहाटी-781005 से प्रकाशित एवं मुद्रित। संपर्क : 69001 26012
ई-मेल:official.janjanvichar@gmail.com, वेबसाइट: www.janjanvichar.in ● कार्यकारी संपादक : सुभाष कुमार चौधरी ●संपादक : धनेश्वर चौधरी